विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

दूसरों के जीवन में ताक-झांक की ही क्यों जाए?

इन दिनों हाल में कीर्ति चक्र प्राप्त एक शहीद की विधवा और शहीद के माता–पिता के बीच का अप्रिय विवाद सोशल मीडिया पर छाया हुआ है। हम जिस समय में जी रहे हैं वह भयंकर जल्दबाज़ी और आपाधापी का समय है। ठहर कर, तथ्यों की पड़ताल कर और विवेक पूर्वक सोच कर कि हमें कहां कुछ कहना है, कहां चुप रहना है, अपना मुंह खोलने की प्रवृत्ति लगभग लुप्त हो चुकी है। उसकी जगह तुरंत अपनी प्रतिक्रिया देने की, और केवल प्रतिक्रिया देने की ही नहीं, मूल्य निर्णय कर डालने की भी प्रवृत्ति का बोलबाला है। किसी की सराहना करने में हम भले ही संकोच और विलंब कर जाएं, आलोचना और निंदा करने में हम जैसे सदा फर्स्ट आने की प्रतियोगिता में शामिल रहते हैं। हमें भय रहता है कि कहीं हमसे पहले कोई और यह 'महान' काम न कर जाए! इसलिए जानते–सोचते बाद में हैं, बुरा होने का प्रमाण पत्र पहले बांट देते हैं। हमें कभी लगता ही नहीं कि किसी का निजी भी कुछ हो सकता है, और यह भी नहीं लगता कि जो बात हमारे संज्ञान में आई है वह मिथ्या या विकृत या किसी ख़ास पक्ष को उठाने या गिराने के मक़सद से गढ़ी हुई भी हो सकती है।

जहां तक परिवारों की बात है, कुछ बातें हमने पहले से तय कर रखी हैं। मसलन यह कि सौतेली मां हमेशा बुरी ही होगी। मसलन यह कि बहू का कोई लगाव अपने सास–ससुर से हो ही नहीं सकता है। मसलन बेटी और बहू में से बेटी हमेशा अच्छी और बहू हमेशा बुरी ही होगी, मसलन सास अपनी बहू को कभी प्यार दे ही नहीं सकती, मसलन शादी होते ही बेटा पराया हो जाता है, मसलन बहू हमेशा पति को अपने वश में करके उसके परिवार से काट देती है, मसलन शादी के बाद भी बेटे को पत्नी पर अपनी मां को ही वरीयता देनी चाहिए, मसलन बच्चे चाहे कितने भी बड़े क्यों न हो जाएं, उनके जीवन के सारे निर्णय करने का हक़ उनके मां–बाप का ही रहना चाहिए, वगैरह।

इस तरह की और भी अनेक विकृत धारणाएं हमारे यहां प्रचलन में हैं। भले ही सारे लोग इनकी गिरफ़्त में न हों, इनका चलन अपवाद तो नहीं है। स्त्रियों को लेकर, दलितों को लेकर, आदिवासियों को लेकर, मुस्लिमों–अल्पसंख्यकों को लेकर, ईसाइयों को लेकर, पुलिस को लेकर, ग़रीबों को लेकर, नेताओं को लेकर, अफसरों को लेकर, विदेश को लेकर, खान–पान को लेकर, वेश विन्यास को लेकर, नौकरी करने वाली स्त्रियों को लेकर, आधुनिकता को लेकर, विज्ञान को लेकर, धर्म निरपेक्षता को लेकर जिस तरह की धारणाओं से हम आए दिन रू–ब–रू होते हैं, उनसे पता चलता है कि हमारे मनों में कितना ज़हर भरा पड़ा है। इधर के राजनीतिक पर्यावरण ने इन सब बातों को और अधिक हवा दी है। दूसरों के प्रति नफ़रत घटने की बजाय बढ़ी है। केवल हम और हमारा सोच ही सही है, यह विचार और अधिक दृढ़ हुआ है। यह सब किसी स्वस्थ समाज में हो ही नहीं सकता। और अगर हमारे समाज में है तो सोच लीजिए कि हमारा समाज कैसा है!

कोई भी विवेकशील व्यक्ति यह समझ सकता है कि किसी भी कृत्य के पीछे घटनाओं और स्थितियों का एक लम्बा सिलसिला होता है। अगर एक व्यक्ति दूसरे से कोई रिश्ता तोड़ता है तो वह ऐसा अचानक नहीं करता है। उसके ऐसा करने के पीछे बहुत सारे कारण होते हैं। लेकिन हम उन कारणों को न तो जानते हैं और न जानना चाहते हैं। बल्कि यह जो दूसरी बात है उसके संदर्भ में मुझे यह भी कहना है कि आखिर हमें जानना भी क्यों चाहिए? हरेक की एक निजी स्पेस होती है। उसमें घुसपैठ करने वाले हम होते कौन हैं? एक परिवार के दो सदस्यों के बीच अगर कोई मन मुटाव हुआ है तो हम यह उम्मीद भी क्यों करते हैं कि दोनों पक्ष हमारी अदालत में आकर अपनी सफाई देंगे। और अगर दोनों में से किसी एक ने अपना पक्ष सार्वजनिक किया है तो क्या उसे जस का तस स्वीकार करते हुए हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि दूसरे पक्ष को तो हमने जाना ही नहीं है। बहुत बार तो मुझे किसे पक्ष का मौन रह जाना, मुखर हो जाने वाले पक्ष की तुलना में अधिक विवेकपूर्ण और गरिमापूर्ण भी लगता है। जैसे वह कह रहा है कि यह हमारा निजी मामला है, आप इसे लेकर क्यों जिज्ञासु हो रहे हैं!

कोई भी विवेकशील व्यक्ति यह समझ सकता है कि किसी भी कृत्य के पीछे घटनाओं और स्थितियों का एक लम्बा सिलसिला होता है। अगर एक व्यक्ति दूसरे से कोई रिश्ता तोड़ता है तो वह ऐसा अचानक नहीं करता है। उसके ऐसा करने के पीछे बहुत सारे कारण होते हैं। लेकिन हम उन कारणों को न तो जानते हैं और न जानना चाहते हैं।

असल में यह एक कटु यथार्थ है कि अभी हमें एक संज़ीदा, संवेदनशील और विवेकशील मनुष्य बनना है। दुखद यह है कि हमने ऐसा बनने की प्रक्रिया शुरू भी नहीं की है। हमारी शिक्षा व्यवस्था, हमारा पारिवारिक ढांचा, हमारी समाज व्यवस्था और हमारा पूरा परिवेश जैसे इस आदर्श स्थिति को लाने के प्रतिरोध में खड़ा है। कोई सोच भी नहीं रहा है कि शुरुआत कहां से और कैसे की जाए! शिक्षा के नाम पर हम सूचनाएं उंडेल रहे हैं, वे सूचनाएं जो हम नहीं भी देते तो कोई हर्ज़ नहीं था। जो शिक्षा दे रहे हैं, सही मानों में तो वे ख़ुद भी अशिक्षित हैं। आप किसी सरकारी स्कूल में जाकर देख लीजिए, आपको पल भर में पता चल जाएगा कि माट्साब कैसे हैं और वे कैसी शिक्षा देते होंगे। निजी स्कूलों का हाल भी इससे बहुत भिन्न नहीं है। हां, चमक–दमक वहां बेशक ज़्यादा है। अधिकतर शिक्षक घोर सांप्रदायिक, रूढ़िवादी, परम्परा से चिपके हुए और जड़ हैं। नया कुछ पढ़ना और सोचना उनके स्वभाव में है ही नहीं। वे तो बस नौकरी बजा रहे हैं और जो उनके तथाकथित संस्कार हैं उन्हें नई पीढ़ी पर आरोपित कर रहे हैं। सरकारें शिक्षकों को अद्यतन बनाने के लिए करती तो बहुत हैं लेकिन उसके पीछे कोई सोच नहीं होता है। इसलिए यह सब एक निरर्थक कवायद से अधिक कुछ नहीं होता।

कभी सुबह या शाम किसी पार्क में जाकर चुपचाप खड़े रहकर वहां एकत्रित बुज़ुर्गों की बात सुनिये। आपको पता चल जाएगा कि हमारा समाज कैसा है। यह यों ही नहीं है कि इधर के बहुत सारे विमर्श में सोसाइटी के अंकलों का उपहास होने लगा है। वे इसके सुपात्र हैं। उन्हें संवाद पसंद नहीं, असहमति पसंद नहीं, समानाधिकार पसंद नहीं, उन्होंने जो मान और सोच लिया वह अंतिम है।

इन सारी स्थितियों के बीच जब यह दुर्भाग्यपूर्ण विवाद सब जगह छाया हुआ है, तो हालांकि हमारे परिवेश में इससे भिन्न कुछ होने की उम्मीद मैं नहीं करता, मुझे बहुत बुरा लग रहा है। मां–बाप ने अपना बेटा खोया है, पत्नी ने अपना पति खोया है – और यह कोई मामूली क्षति नहीं है। हरेक दुख के महासागर में डूबा है, और यह कहना निर्ममता की पराकाष्ठा है कि हो सकता है युवा पत्नी फिर से अपने लिए कोई संबल तलाश ले, मां–बाप तो हमेशा दुखी ही रहेंगे। असल में न पत्नी का दुख कम है न मां–बाप का। दोनों की तुलना करना अनावश्यक और अनुचित है। यहां मुझे उस पत्नी का व्यवहार बहुत गरिमापूर्ण लग रहा है जो इस सारे विवाद के बीच मौन है। आखिर क्यों उसे अपना दुखड़ा हरेक के सामने रोना चाहिए? यह कहते हुए मैं उस शहीद के मां–बाप की आलोचना नहीं कर रहा। बहुत मुमकिन है कि सनसनी के भूखे मीडिया ने उन्हें कुरेदा हो, उकसाया हो और इस मनस्थिति में ला पटका हो कि वे अपनी पीड़ा सबके सामने रखें। लेकिन, जैसा मैंने पहले भी कहा है, सच वही नहीं होता है जो हमें दिखाई और सुनाई देता है, उससे इतर भी हो सकता है। और कोई भी फैसला करने से पहले हमें इस बात की संभावना को भी दृष्टिगत रखना चाहिए। लेकिन इससे भी पहले, हमें यह सोचना चाहिए कि हम फैसला करने वाले होते कौन हैं? किसने हमें यह हक़ दिया है कि हम दूसरों के जीवन में ताक झांक करें और किसी को सही और किसी को ग़लत घोषित करें!

मैं जिस संवेदनशील और विवेकी समाज का सपना देखता हूं उसमें किसी के भी निजी जीवन में झांकना वर्जित होगा, उसके बारे में कोई फैसला करना तो बहुत दूर की बात है। कामना करें कि ऐसा समाज हम बना सकेंगे। न भी बना सकें तो उसके लिए कोशिश तो करेंगे। और अगर कोई इस आदर्श समाज व्यवस्था के खिलाफ़ कुछ करता नज़र आएगा तो उसे रोकेंगे, उसे टोकेंगे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सच्चा दोस्त वो है जो जीवन में बने सुख-दु:ख का साथी

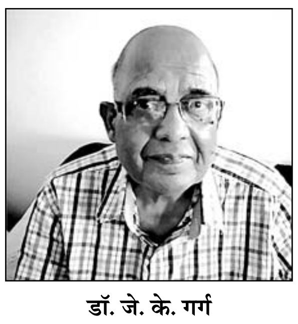

डॉ. जे. के. गर्ग

दोस्ती का शाब्दिक अर्थ है– दो हस्ति – यानि दो हस्तियों का मिलन। सच्चाई तो यही है कि सच्चा दोस्त तो वही है जो उस समय हमारे साथ खड़ा रहता है जब सारी दुनियाँ यहाँ तक कि हमारे स्वजन भी हमारा साथ छोड़ देते हैं। सच्चा दोस्त वही है जो हमारे अंदर की अच्छाइयों को उभारने मे हमारी मदद करे और हमारी कमियों को विनम्रता से बता कर उसे दूर करे। सच्चा मित्र हमारी परेशानियों और तकलीफों को अपना बना लेता है ताकि इन्हें हम अकेले नहीं भूखें। सच्चा दोस्त हमारी असफलताओं पर हमें सम्भालता है और हमें संबल प्रदान करता है वहीं दूसरी तरफ हमारी सफलताओं पर जश्न एवं खुशियाँ मनाता है और अति उत्साहित होने एवं अहंकार से दूर रखता है। सच्चे दोस्त कभी भी पीठ पीछे हमारी बुराई नहीं करते। सच्चे मित्र उस गुरु के समान हैं जो हमें अच्छी बातें सिखाते हैं और हमारी गलतियां हमें बताते हैं और उन्हें सुधारने मे हमारी मदद भी करते हैं। सच्ची मित्रता मे संदेह और शक की कोई भी जगह नहीं होती है। सच्ची दोस्ती दो शरीर एक जान के समान है। सच्ची मित्रता संसार–सागर की तरंग, विश्व–उद्यान में गुलाब के फूल की तरह है जिसकी खुशबू चारों दिशाओं में फैलती है। सच्ची दोस्ती हृदय–मंदिर का अखंड दीप भी है। जब हम हम हमारी तकलीफों और और परेशानी को छिपाने की कोशिश करते हैं। सच्चा मित्र ही बिना कहे हमारी तकलीफों और और परेशानी समझ लेता है और हमें संबल प्रदान करते हैं। वास्तविता में सच्ची मित्रता के बिना जिंदगी एक मरुस्थल की भांति बन जाती है।

सच्चा दोस्त वो हे जो जीवन में बने सुख–दु:ख का साथी

दुनिया भर में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों के स्त्री–पुरुषों के लिये पारस्परिक रिश्ते महत्वपूर्ण और खास होते है। हम परिवार में विभिन्न रिश्तों की डोर से यानि पति–पत्नी, माता–पिता, भाई–बहन, चाचा– चाची, दादा–दादी, नाना–नानी आदि से बंधे होते हैं। किन्तु मित्रता का रिश्ता अपने आप में अनूठा और विशिष्ट होता है क्योंकि मित्र हमारे राजदार होने के साथ हमारे सुख–दुख के साथी भी होते हैं। मनोविश्लेषक वंदना प्रकाश के अनुसार हमारे जीवन में दोस्त दरअसल वे जो हमारे तनाव और मुसीबत के पलों के वक्त दवा का काम करते हैं, वहीं खुशी के वक्त हमारे उत्प्रेरक बनकर हमारी खुशी और आनंद चौगुणा बना देते हैं। मनोविश्लेषण के मुताबिक हम अपने जीवन की सभी बातें अपने माता–पिता या भाई बहनों के साथ नहीं बांट सकते हैं किन्तु हम जीवन में दोस्तों से अपने मन की सभी बातें बेझिझक कर सकते हैं। मनोविशलेषक डॉक्टर संजीव त्यागी के अनुसार किसी के भी जीवन में दोस्त उतना ही जरूरी होता है जितना भोजन। अगर हमारे जीवन में दोस्त न हो तो हम बिल्कुल वैसे ही मुरझा जाएंगे जैसे भोजन न मिलने पर हमारा शरीर निशक्त और दुर्बल हो जाता हैं। अत; जहाँ भोजन हमारे शरीर के लिए जरूरी है वहीं दोस्त हमारे स्वस्थ मन के लिये जरूरी होते हैं।

शोध के मुताबिक अगर आप सप्ताह में सिर्फ दो घंटे भी दोस्तों के साथ गुजारते हैं तो आप पूरे सप्ताह तरोताजा महसूस करते हैं और आप में काम करने की स्फूर्ति भी बनी रहती है। मित्रता का तत्व हमारे अंतरंग संबंधों का विशेषज्ञ बन सकता है। शोधकर्ताओं ने शोध के बाद बताया है कि मित्रता वह स्प्रिंगबोर्ड है, जिससे बाक़ी सभी तरह का प्रेम उत्पन्न होता है। जिन लोगों की किसी से मित्रता नहीं होती, वे किसी भी किस्म का प्रेम करने में तुलनात्मक रूप से कम योग्य अथवा कम सक्षम होते हैं। वे कई बार विवाह करते हैं, अपने परिवार के सदस्यों से दूर हो जाते हैं और उन्हें ऑफ़िस में भी सहकर्मियों से संबंध बनाने में समस्याएं आती हैं। दूसरी तरफ जो लोग मित्रतापूर्ण संबंध बनाने का तरीका जानते हैं, वे अपने ऑफ़िस और परिवार में अच्छे खासे लोकप्रिय होते हैं। वास्तविकता में मित्रता सभी अंतरंग रिश्तों का आधारभूत तत्व है। अमेरिका के एक अग्रणी मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषण से पूछा गया कि कितने पुरुषों के सच्चे मित्र होते होंगे। जवाब था– 'ज़्यादा नहीं', या 'बहुत कम' यानी लगभग 10 प्रतिशत या उससे भी कम। याद रक्खें कि विदेश में विद्या मित्र होती है वहीं घर में पत्नी और आत्मीय स्वजन मित्र होते हैं। रोगी का मित्र औषधि बनती है, वहीं धर्म ही मृतक का मित्र होता है। मित्र वे दुर्लभ लोग होते हैं, जो हमारा हालचाल पूछते हैं और उत्तर सुनने को रोकते भी हैं। बुद्धीमान और विवेकशील मित्र ही जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। सच्चा दोस्त हीरे की तरह अमूल्य और दुर्लभ होता हैं वहीं झूठे, मतलबी दोस्त पतझड़ की पत्तियों की तरह हमें जीवन में हर जगह मिलते रहते हैं। सच्चाईयों में जीवन में अच्छे दोस्त का बहुत महत्व होता है क्योंकि अच्छा दोस्त हमारे जीवन के हर फिल्ड में खुशियों, उल्लास और सोहार्द के सतरंगी रंग भर देता है। आज इंसान का जीवन बहुत ही कठिनाइयों से भरा हुआ है और ऐसे में एक मित्र का महत्व हमारे लिए ठीक उस तरह है जिस तरह शुद्ध वायु इन्सान के जीवन के लिए अमृत है, इसीलिए एक सच्चा मित्र किसी जीवनदायक अमृत से कम नहीं है! आज जिस तरह का वातावरण हमारे आस–पास निर्मित हैं, जहाँ एक–दूसरे पर विश्वास करना बड़ा मुश्किल हैं, जहाँ कोई भी किसी को कभी भी धोखा दे सकता है, अपना बनाकर हमारी पीठ में छुरा घोंप सकता है, फिर चाहे ऐसे लोग हमारे अपने सगी सम्बन्धी ही क्यों ना हों। इसीलिए ऐसे जटिल समय में हम सभी को एक सच्चे दोस्त की आवश्यकता होती है जो किसी भी हालात और परिस्थियों में हमारी मदद करने को तैयार रहता है और हमें गलत राह पर जाने से रोकता है।

मेरे कोमल कदम रुक गए जब मैं पहुंचा रिश्तों के बाजार में जहाँ रिश्ते भी बेचे–खरीदे जाते हैं। मैने देखा कि यहाँ बिक रहे थे रिश्ते खुले आम व्यापार में। कांपते होठों से मैंने पूछा, "क्या भाव है भाई इन रिश्तों का..?" दुकानदार बोला:– "कौन सा लोगे..? बेटे का...या बाप का..? बहन का...या भाई का..? बोलो कौन सा चाहिए..? इंसानियत का..या प्रेम का..? माँ का..या विश्वास का..?" मुझे चुप देख कर दुकानदार बोला– 'बाबूजी कुछ तो बोलो कौन सा चाहिए।' मैंने डर कर पूँछ लिया,– 'दोस्त का..'। दुकानदार नम आँखों से बोला भाई–"संसार इसी रिश्ते पर ही तो टिका है..." माफ़ करना बाबूजी ये रिश्ता बिकाऊ नहीं है क्योंकि आप इसका कोई मोल नहीं लगा पाओगे, और जिस दिन यह रिश्ता बिक जायेगा...सच मानों, उस दिन ये संसार उजड़ जायेगा। सच्चाई तो यही है कि दोस्ती का रिश्ता अनमोल और अनूठा है, भाग्यशाली है वो जिनके पास दोस्त हैं। जो बिना किसी मतलब के अपनी दोस्ती निभाता है! आज जिन लोगों के पास कोई सच्चा मित्र नहीं हैं वह इंसान इस भीड़भरी दुनिया का सबसे अकेला प्राणी हैं और उसके लिए दुनिया की कोई भी ख़ुशी बिना दोस्त के अधूरी हैं।

एक सच्चा मित्र अपनी सूझ–बूझ से हर वक़्त हमें गलत राह पर जाने से रोकता है, मुसीबत के समय ढाल बनकर हमारी रक्षा करता हैं! आपके जीवन में अगर अच्छा दोस्त नहीं है तो कुछ भी नहीं है! हम सभी ने दोस्ती और मित्रता के सैकड़ों किस्से और कहानियां सुनी हैं जैसे "राम–सुग्रीव" की मित्रता, "कृष्ण–सुदामा" की मित्रता, जिसमें मित्रता के लिए सच्चे समर्पण को देखा गया है। जहाँ ऊंच–नीच, जात–पात, छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब, राजा–रंक जैसी छोटी सोच का कोई स्थान नहीं था। आज ऐसे कई उदाहरण हमारे पास हैं जो सही मित्र और मार्गदर्शक ना मिल पाने के कारण अपनी सही राह से भटक गए हैं और बुराई के उस मुकाम तक पहुँच गए जहाँ कोई भी आम इंसान जाना नहीं चाहता! क्योंकि एक सच्चा मित्र हमारा बहुत बड़ा शुभचिंतक और मार्गदर्शक होता है। समाचार, चुटकुले, अफवाह और आलोचनाओं का विनिमय हर किसी के साथ हो सकता है परंतु हृदय की बातों, मन की भावनाओं, दुख, संकोच, स्वप्न और आकांक्षाओं आदि के विनिमय के लिए सच्चे मित्र की जरूरत पड़ती है। मित्र के अंदर की बातें निकलवाने का कुतूहल नहीं होता। इसलिए उससे उन्हें कहने का मन होता है। आदर्श मित्र बनने की प्रक्रिया में मनुष्य का व्यक्तित्व सुदृढ़, सुशोभित और समृद्ध बनता है। मित्रहीन मनुष्य तारों के बिना आकाश तथा पक्षियों के बिना उपवन के समान है। मैत्री का सौम्य संगीत सुनकर हृदय को पंख लग जाते हैं, मन में अलौकिक उल्लास की बाढ़ आती है, जीवन–यात्रा की मंजिल तय करने के लिए अदम्य उत्साह अनुभव होता है। जिसे सच्चा मित्र मिल गया, उसे जीवन का खजाना ही मिल गया। जो स्वयं सच्चा मित्र बना, वह सच्चा इंसान भी बन गया। सवाल उठता कि नए मित्र बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? इसका सीधा जवाब यह दिया जा सकता है कि मित्र बनाने के लिए प्रथम हम स्वयं मित्र बन जायें। अपनी हृदय–समृद्धि का दूसरों को भागीदार बनाएं, दूसरों की भावनाओं का आदर करें, वफादारी के व्रत का निष्ठा से पालन करें, गुप्त बातों को गुप्त ही रखें। जरूरत पड़ने पर दूसरों की मदद मांगें, और दूसरा जब कभी हमसे मदद मांगें उससे पहले ही उनकी मदद के लिए तैयार रहें और मित्र के लिए न्याय करने का प्रसंग आए तब अपने को भाग्यशाली समझे।

आज जिस तरह का वातावरण हमारे आस–पास निर्मित हैं, जहाँ एक–दूसरे पर विश्वास करना बड़ा मुश्किल हैं, जहाँ कोई भी किसी को कभी भी धोखा दे सकता है, अपना बनाकर हमारी पीठ में छुरा घोंप सकता है, फिर चाहे ऐसे लोग हमारे अपने सगी–सम्बन्धी ही क्यों ना हों। इसीलिए ऐसे जटिल समय में हम सभी को एक सच्चे दोस्त की आवश्यकता होती है जो किसी भी हालात और परिस्थियों में हमारी मदद करने को तैयार रहता है और हमें गलत राह पर जाने से रोकता है।

-डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त शिक्षा निदेशक,
कॉलेज शिक्षा जयपुर

आदर्श पत्रकार बिशन सिंह जी शेखावत की स्मृति में राजस्थान सरकार प्रतिवर्ष देगी राज्य का सर्वोच्च पत्रकारिता पुरस्कार

जयपुर। राजस्थान सरकार ने यह घोषणा की है कि राज्य में उत्कृष्ट पत्रकारिता करने वाले पत्रकार को प्रतिवर्ष राज्य का सर्वोच्च पत्रकारिता पुरस्कार राज्य के आदर्श पत्रकार रहे बिशन सिंह जी शेखावत की स्मृति में दिया जाएगा।

मेरे लिए यह विशेष गर्व का विषय है कि देश की आजादी की परिस्थितियों में पूर्व प्रधानमंत्री एवं चर्चित राष्ट्रीय दैनिक रहे वीर अर्जुन के संपादक अटल बिहारी वाजपेयी के निर्देशन में वीर अर्जुन के राजस्थान के विशेष प्रतिनिधि के रूप पत्रकारिता, जिसे किसी जमाने में एक मिशन समझा जाता था, में एक समर्पित कलम के सिपाही के रूप में प्रभावी रूप से अपनी एक पहचान का सिलसिला शुरू करने वाले, मेरे स्वर्गीय पिता बिशन सिंह शेखावत ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो विशिष्ट आयाम स्थापित किये, उनकी स्मृति में राज्य सरकार ने इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को दिए जाने की घोषणा की है, यह निश्चित रूप से राज्य की पत्रकारिता में एक नई प्रेरणादायक दिशा का संचार करेगा।

मुझे याद है, लगभग पांच वर्षों तक चला असम का छात्र आंदोलन हो या पंजाब में जनरल सिंह भिंडरावाला जैसे

बिशन सिंह शेखावत

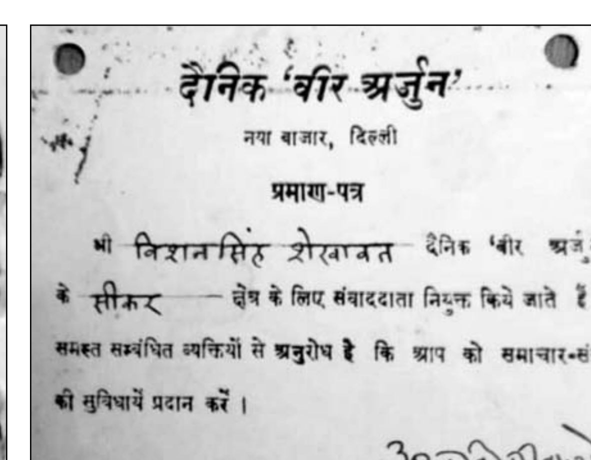

दैनिक 'वीर अर्जुन'
नया बाजार, दिल्ली
प्रमाण-पत्र
श्री बिशन सिंह शेखावत दैनिक 'वीर अर्जुन' के सीकर क्षेत्र के लिए संवाददाता नियुक्त किये जाते हैं।
समस्त सम्बंधित व्यक्तियों से अनुरोध है कि आप को समाचार-संग्रह की सुविधायें प्रदान करें।
अटल बिहारी वाजपेयी
१० अगस्त '५२। प्रधान सम्पादक

आतंकवादियों के आतंक से जुड़े खोजपूर्ण तथ्यों को आम जनमानस के सामने लाने का विषय हो, उनकी लेखनी का एक–एक शब्द आम जनमानस में गहन रुचि और रोचकता का आकर्षण बन गया था, राज्य से जुड़े प्रत्येक ज्वलंत विषय पर उनकी कलम से लिखे शब्दों ने न केवल आम जनमानस को आश्चर्यचकित वरन तत्कालीन सरकारों को सोचने के लिए भी विवश कर दिया था। सर्दी, गर्मी, धूप और बरसात की परवाह किए बिना राजस्थान के विभिन्न जिलों में फैले लगभग 1800 गांवें में व्यक्तिगत रूप से जाकर इन गांवों से जुड़े ग्रामीणों की अत्यधिक कष्टभरी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिणक व अन्य आयामों को समाहित करते हुए अपनी लेखनी के माध्यम से जिस रूप में उन्होंने आम जनमानस और तत्कालीन सरकारों के समक्ष जीवंत चित्रण रखा वह आज भी आम जनमानस के दिल दिमाग में है. संभवत पहली बार इतनी बड़ी संख्या में राज्य के गांवो से जुड़ी धरातलीय स्थिति सार्वजनिक रूप से प्रकाश में आई, इसी लेखनी के आधार पर इन गांवों के लिए सरकारों को कई जनकल्याणकारी कार्यक्रमों की भी शुरुआत करनी पड़ी। लालकृष्ण आडवाणी, सुंदर सिंह भंडारी जैसे नेताओं के साथ जयपुर के गोपाल जी के रास्ते में एक कमरे में साथ रहकर, नेतृत्व क्षमता की दक्षता का गुण जो उन्होंने हासिल किया, वह आगे चलकर राजस्थान के लाखों कर्मचारियों, शिक्षकों के न्यायोचित अधिकारों के लिए किए गए ऐतिहासिक आंदोलनों का उन्हें तपस्वी, समर्पित, विश्वास परख नेतृत्वकर्ता के रूप में सामने लाया, उन्हीं के ऐतिहासिक एक संघर्ष का परिणाम है, कि आज राज्य का प्रत्येक राज्य कर्मचारी केंद्र के कर्मचारी के बराबर महंगाई भत्ता अपने वेतन में पा रहा है। यह भी एक विशिष्ट तथ्य है की उनके पत्रकारिता के पवित्र कर्म में राज्य के गांवों में बैठे शिक्षकों, पटवारी, ग्राम सेवकों व अन्य राज्य कर्मचारियों ने भी उन्हें उनके इस कर्म में बड़े आत्मीय भाव से आगे आकर केवट के रूप में अपना सहयोग दिया, राजस्थान सरकार विशेष रूप से राज्य के मुख्यमंत्री भजनलाल जी शर्मा का विशेष रूप से आभार।

डॉ. भूपेंद्र सिंह शेखावत
अध्यक्ष,
बिशन सिंह शेखावत शोध एवं शिक्षण संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

पग-पग पर गड्ढों में तब्दील हुई सड़क से डिग्गी लक्खी मेले में पहुंचेंगे कल्याण भक्त

मालपुरा (निसं)। प्रदेश के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक डिग्गी कल्याण जी की धर्म नगरी डिग्गी में आयोजित होने वाले 59वें लक्खी मेले की तारीख व कार्यक्रम घोषित होने के साथ–साथ रविवार को लक्खी पदयात्रा संयोजक श्रीजी शर्मा ने डिग्गी पहुंच कल्याण जी के समक्ष पदयात्रा के पोस्टर का विमोचन किया। 11 अगस्त को जयपुर से पदयात्रा के शुभारंभ के साथ ही लक्खी मेले का शुभारंभ होगा जो कि 15 अगस्त को पदयात्रा का निशान मंदिर शिखर पर चढ़ने के साथ लक्खी मेले का समापन होगा। लक्खी मेले के भव्य आयोजन को लेकर डिग्गी कल्याण जी के भक्तों में भी इस बार खासा उत्साह देखा जा रहा है तो वही दूसरी और उपखण्ड व जिला प्रशासन के साथ–साथ सार्वजनिक निर्माण विभाग मैला तैयारियों व डिग्गी तीर्थ स्थल की ओर आने वाले सभी सड़क मार्गों पर हुये गहरे गड़ढों तथा कांटों भरी राह की जमीनी हकीकत जानकर भी अनजान बना बैठा है। डिग्गी तीर्थ की ओर आने वाले जयपुर भीलवाडा स्टेट हाईवे, डिग्गी सोहेला सड़क मार्ग, देवली मालपुरा वाया डिग्गी, केकडी से डिग्गी तो अजमेर से डिग्गी तथा मालपुरा से पीनणी होकर डिग्गी पहुंचने वाले प्रमुख सडक मार्ग जगह–जगह से क्षतिग्रस्त हो गहरे गड्ढो में तब्दील हो गये है। वाहन चलाना तो दूर इन मार्गो पर पैदल चलना भी खतरे से खाली नहीं है। पग–पग पर हुये गहरे गड़ढे व उनमे भरा बरसाती पानी आये दिन सड़क दुर्घटनाओं का कारण बन रहा है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 15 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, स्वातली नक्षत्र रात्रि 12:30 तक, सिद्ध योग प्रात: 7:00 तक, बालव करण प्रात: 6:23 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–तुला, मंगल–वृष, बुध–कर्क, गुरू–वृष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। यमघट योग सूर्योदय से सायं 7:15 तक है। कुमार योग रात्रि 12:30 से आरम्भ होगा। भडल्या नवमी है। गुप्त नवरात्रा समाप्त होंगे। श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:28 तक, शुभ 9:09 से 10:51 तक, चर 2:14 से 3:36 तक, लाभ–अमृत 3:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:46, सूर्यास्त 7:19

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच–विचार हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

कर्क
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। नवीन कार्यों मे उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। शुभ कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आज परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रही आपसी अनबन दूर होने लगेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों मे उचित सफलता मिलेगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।